प्रेस विज्ञप्ति

लकवा मस्तिष्क से सम्बन्धित बीमारी है जिसका अब इलाज सम्भव है। यह विकलांगता का एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारण व मृत्यु का दूसरा सबसे प्रमुख कारण है। लगभग हर 40 सेकण्ड में कोई न कोई लकवे से ग्रसित होता है और लगभग हर 4 मिनट में एक व्यक्ति की लकवे के कारण मृत्यु हो जाती है। भारतवर्ष में लकवा मृत्यु का एक बहुत बड़ा कारण है।

उच्च रक्तचाप, डायबिटीज, हृदय से सम्बन्धित बीमारियां, धूम्रपान, मदिरापान, धमनियों में अत्यधिक वसा का होना, अनियमित दिनचर्या, व्यायाम की कमी, फल व हरी सब्जियों का सेवन न करने से लकवा होने की सम्भावना बहुत बढ़ जाती है।

भारतवर्ष में लकवा बहुत तेजी से बढ़ रहा है और इससे काफी लोग ग्रसित होते जा रहे हैं और यह एक महामारी का रूप ले रहा है। जिसका सबसे बड़ा कारण ब्लड़ शुगर व अनियन्त्रित रक्त चाप है। वर्ष 2025 तक आंकड़ों के अनुसार डायबिटीज से ग्रसित लोग सबसे ज्यादा भारत में होंगे।

मा0 कुलपति प्रो0 एम0एल0बी0 भट्ट ने सभा को सम्बोधित करते हुए, समय से लकवे की पहचान और उसके इलाज के बारे में बताया ओर उन्होंने यह भी बताया कि लकवे से सम्बन्धित समस्त उपचार और थ्रॉम्बोलिसिस की सुविधा चिकित्सा विश्वविद्यालय में उपलब्ध है। **उन्होंने लकवे के मरीजों के हित के लिए स्ट्रोक हेल्पलाइन नम्बर (8887147300)** का अनावरण भी किया। स्ट्रोक मरीजों के त्वरित उपचार के लिए स्ट्रोक कोरिडोर का गठन किया गया है जिससे मरीजों को जल्द से जल्द से उपचार मिल सकें।

डॉ0 आर0 के0 गर्ग (विभागाध्यक्ष न्यूरोलॉजी) ने बताया कि यहां ट्रामा सेन्टर में थ्रॉम्बोलिसिस सुविधा देने के सारे सुदृढ़ प्रबन्ध किये गये है। लकवे के मरीजों के इलाज के लिए 24 घंटे न्यूरोलॉजिस्ट उपलब्ध है। केन्द्र सरकार के स्वास्थ्य कार्यक्रम (एन0पी0सी0डी0सी0एस) के अर्न्तगत स्ट्रोक को भी प्राथमिकता दी गयी है। जिसके अन्तर्गत लकवे के प्रति जागरूकता, बचाव और समय से उसके उपचार को बढ़ावा दिया जा रहा है।

डॉ0 राजेश वर्मा (प्रोफेसर न्यूरोलॉजी) ने बताया कि **विश्व पक्षाघात संगठन (WSO), विकासशील देशों में लकवे के बढ़ते हुए दुष्प्रभाव के प्रति काफी संवेदनशील है। विश्व लकवा दिवस (29 अक्टूबर 2016)** के उपलक्ष्य में एक विज्ञप्ति जारी करके लकवे की जागरूकता पर जोर दिया गया है। विश्व पक्षाघात संगठन के अनुसार जागरूकता और समय पर इलाज से लकवे से होने वाली विकलांगता व मृत्यु को कम किया जा सकता है।

हर व्यक्ति को लकवे के लक्षणों को जानना चाहिए जो कि निम्न है–एक हाथ या एक पैर में अचानक कमजोरी आना, बोलने में दिक्कत होना या बोली का अस्पष्ट होना, धुंधला दिखना या एक आँख से न दिखना, अचानक मूर्च्छित हो जाना, अचानक लड़खड़ाना या ठीक से न चल पाना आदि।

डॉ0 नीरज कुमार (असिस्टेन्ट प्रोफेसर न्यूरोलॉजी) ने बताया कि स्ट्रोक के लक्षणों को जल्द पहचानने से व समय से उसको थ्रॉम्बोलिसिस सुविधा वाले अस्पताल पहुंचाने से मरीज का उपचार सम्भव है। **आर0टी0पी0ए0 (रिकॉम्बिनेन्ट टिश्यू प्लाजमिनोजेन एक्टीवेटर) नामक इन्जेक्शन से 4.30 घंटे के अन्दर आने वाले मरीजों का इलाज सम्भव है।** यह इन्जेक्शन रक्त के थक्के को पिघलाकर मस्तिष्क में रक्त प्रवाह सुचारू करता है। लकवे की जांच के लिए केवल मस्तिष्क के सी0टी0 स्कैन की जरूरत होती है। हमारा उद्देश्य जल्द से जल्द लकवा पहचानकर उसकी जांच करके मरीज को इन्जेक्शन का फायदा दिलाना है जिससे लकवे से होने वाली आजीवन विकलांगता व मृत्यु को कम किया जा सकें।

डॉ0 हैदर अब्बास (विभागाध्यक्ष इमरजेन्सी मेडिसिन) ने बताया कि आकस्मिक चिकित्सा विभाग जल्द से जल्द मरीजों में लकवे के लक्षण को पहचान कर सारी जांचे करवाकर उन्हें थ्रॉम्बोलिसिस सुविधा उपलब्ध करा रहा है।

सधन्यवाद।

हम उम्मीद करते है कि आप भविष्य में अधिक से अधिक लोगों तक लकवे व उससे सम्बन्धित लक्षणों के बारे में जानकारी पहुंचायेगे।